- मुंह, पैर को लाल दवाओं से धुलाने के बाद लोरेक्सन/चर्मिल पेस्ट को लगाये।
- एंटीबायोटिक व बुखार के लिए टीका लगवाये (मेलोनेक्स/वेटालिज्म 5 मिली.)।

**निमोनिया रोग:**

**लक्षण–**

बकरियों का यह प्रमुख रोग है, बकरिया ठण्ड से कांपने लगती है, नाक से तरल पदार्थ का बहाव होने लगती है साथ ही श्वास लेने में दिक्कत होती है। बीच–बीच में खांसी भी आती रहती है।

**उपचार–**

- बकरियों को धूप दिखाएं
- 3–5 मिली एंटीबायोटिक दे।
- खांसी के लिए केपेलोन पाउडर 6 से 12 ग्राम दे।

**क्षय रोग :–**

बकरियों को थोड़ी–थोड़ी देर में दस्त/मल का होना।

**उपचार :–**

- नेबलोन पाउडर 15–20 ग्राम लगातार तीन दिनों तक दें।
- वैक्सिन या नेबलोन पाउडर दें।

**थनेला रोग :–**

थन सूजकर फूल जाती है। कभी–कभी खून भी बहने लगती है।

**उपचार :–**

- पेंदेस्तरिन ट्यूब नामक इंजेक्शन को थन में डाल दे। लगातार 3–5 दिनों तक उपचार करें।

**परजीवियों का आक्रमण–**

बकरीयों के शरीर पर छोटे–छोटे कृमि, कीट उत्पन्न हो जाते है जो खून चुसने का कार्य करती है, जिसके कारण से कमजोर हो जाती है।

**उपचार–**

- बी.एच.सी. और मैलाथियान का छिड़काव करें।
- आईवरमैक्टिन का इंजेक्शन चमड़ी में दे। आलबेन्डाजोल, लेवामेर जेल को लगाये।

**आफरा रोग के लक्षण :–**

- आफरा रोग में बकरियों की पेट फूल जाती है, दबाने पर ढ़ोल जैसे आवाज आती है।
- पेट दर्द के कारण से पैर बार–बार पटकती है।
- सांस लेने में तकलीफ होती है।

**उपचार :–**

- रोग ग्रसित बकरियों को अलग रखे।
- खाना–पीना देना बंद कर दे।
- 1चम्मच खाने का सोड़ा/टिम्पोल पाउडर 15–20 ग्राम को पिलाये।
- 1 चम्मच तारपीन तेल/150–200 मिली मीठी तेल को मिक्स कर पिलाये।

**एंथेक्स रोग –**

बैसिलस एन्थ्रेसिस नामक रोगजनक जीवाणु द्वारा होती है।

**लक्षण –**

- शरीर की चमड़ी में खून जम जाती है।
- बुखार आना, नाक मुहं व मल द्वार से खून का बहना।

**उपचार –**

- टीकाकरण कराये, नजदीकीय पशु चिकित्सक से सलाह ले।

**कब्ज होना –**

**लक्षण –**

- पशु जुगाली करना बंद कर देती है।
- खाना पीना बंद कर देती है।
- पशु की तापमान बड़ जाती है।

**उपचार –**

- रोजाना टहलाये/घुमाये।
- सोडियमबाइकार्बोनेट का उपयोग करें जो कि पेट की एसिडीटी को कम कर देता है।


**प्रस्तुतकर्ता :**

पी. मूवेन्थन, रेवेन्द्र कुमार साहू, बी. एस. राजपूत, गुंजन झा, उत्तम सिंह, मनोज कुमार एवं दिलीप पाटले



**प्रकाशक :**

डॉ. पी. के. घोष

निदेशक एवं कुलपति

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान

बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़– 493225

फोन – 0771–2277333

वेबसाईट – https://nibsm.icar.gov.in/



Publication No. - NIBSM/EF/2021-55


Department of Biotechnology DBT

# DBT Biotech-KISAN Hub

(Department of Biotechnology)

(जैवप्रौद्योगिकी विभाग)

# बकरी पालन : एक लाभकारी व्यवसाय

ICAR - National Institute of Biotic Stress Management

भाकृअनुप – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान

Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2225333

बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2225333

Website : https://nibsm.icar.gov.in/

बकरी पालन व्यवसाय छोटे कृषकों व बेरोजगार युवाओं के लिए आय का एक अच्छा स्त्रोत है जो कम पूंजी पर शुरू किया जा सकता है। हमारे देश में बकरी को गरीबों की गाय के नाम से भी जाना जाता है। बकरी पालन व्यवसाय आर्थिक और समाजिक दृष्टिकोण से भूमि हीन मजदूर, लघु व सीमांत कृषक अपने परिवार के पोषण तथा अन्य आवश्कताओं की पूर्ति के लिए करते हैं। बकरी बहुत उपयोगी और सीधी–साधी होती है और हर तरह की जलवायु में भी ढल जाती है। छोटे कद कि होने के वजह से इनकी देखभाल करना आसान होता है। यह व्यवसाय आय का एक अच्छा स्त्रोत है। बकरी से हमें दूध, मांस, खाल, ऊन और गोबर (मिगनियों) खाद प्राप्त होता है। बकरियों से उत्पन्न मेमनों को बढ़ाकर व बकरों को प्रजनन योग्य तैयार कर अच्छे दामों में बेचकर आय अर्जीत की जा सकती है। भारत में बकरियों की संख्या 1489 लाख है, जिसमें से अधिकांश (95.5 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में से है।

## उत्तम किस्मों के नस्लों का चुनाव

- नर देखने में स्वस्थ, चुस्त व फुर्तीला हो।
- प्रजनन योग्य बकरों की बनावट व रंग नस्ल के अनुरुप हो।
- शरीर का भार अधिक हो।
- सींग पूरी तरह ऊपर में हो।
- शरीर के बाल छोटे व चमकदार हो।

## सिरोही नस्ल

शरीर हष्ट–पुष्ट गहरीला मध्यम आकार की होती है। कान चपटे हुए नीचे की ओर लटके हुए लम्बी पत्तेनुमा आकार की होती है। सिरोही मांस व दूध के लिए अच्छी मानी जाती है। एक बार में ही 2 बच्चों को जन्म देती है। शरीर पर गहरे/हल्के भूरे रंग की धब्बे पायी जाती है। पूँछ छोटी सी ऊपर की ओर उठी हुई होती है। गले के नीचे अंगुली के समान 2 गुल्टे (मासल भाग)। मुंह के जबड़े के नीचे की ओर दाढ़ीनुमा बाल। दूध उत्पादन 75 किलो ग्राम, अवधि 115 दिनों तक देती है।

नर बकरों का वजन 40–50 किलो तक और मादा का 23–27 किलो होती है। यह नस्ल मुख्य रूप से अरावली पर्वत राजस्थान के क्षेत्रों में (नागौर, टौक, राजसमंद, उदयपुर, सिरोही व अजमेर) पायी जाती है।

## आहार व्यवस्था

आहार पशु के वृद्धि और विकास के साथ–साथ दूध, मांस के उत्पादन पर भी असर डालती है इसलिए हमेशा अच्छी गुणवत्ता वाली पौष्टिक आहार दे, आहार में हरा व सूखा चारा का मिश्रण हो। रेशेदार चारे जो वनस्पति पर्यावरण में आसानी से मिल जाते हैं जैसे की बबूल, नीम, अरंडी, बेर, गुलर, जंगली जलेबी, जामुन व खेजड़ी जिसे बकरी आसानी से खाकर पचा लेती है। यदि हमारे पास जमीन और पानी की सुविधा हो तो हरा चारा के रूप में मक्का, बरसीम, जौ, रिजका, गेहूँ आदि फसल ले, जिससे पशु चारा के साथ–साथ दूसरी फसल से प्राप्त दाने को बेचकर अतिरिक्त आय भी कमाया जा सकता है। जिससे खेती की लागत में भी कमी की जा सकती है। आहार में शुष्क पदार्थों के साथ दाने का मिश्रण दे जिससे उत्पादन क्षमता और शारीरिक वृद्धि अच्छी होती है। बकरियां 3.35 प्रतिशत तक अपने शरीर, भार के अनुसार शुष्क पदार्थ खाकर पचा लेती है। सूखा चारा घर पर तैयार करके रखे – 1 किलो नमक, मकई का दाना 1 किलोग्राम, चने का छिलका 15 किलो, गेहूँ का चोकर 40 किलो, मूंगफली की खली 25 प्रतिशत।

## आवास में निम्न बातों का ध्यान रखें

- बकरियों के रख–रखाव हेतु पर्याप्त जगह होनी चाहिए। एक युवा बकरी के लिए 10 वर्ग फिट की जगह आवश्यक है।
- बकरियों का निवास स्थल आरामदायक होनी चाहिए, जहां उन्हें धूप, बरसात, ठंड, जंगली जानवर इत्यादि समस्याओं से जूझना न पड़े।
- सर्दियो में ठंड से बचाव हेतु बिछावन के लिए सूखी घास तथा खिड़कियों मे बोरे के पर्दो का उपयोग करनी चाहिए।
- बकरियों के निवास हेतु बनाये गए बाड़े का फर्श समतल एवं साफ–सुथरी होनी चाहिए।
- बाड़े का छत बनाने के लिए घास फूस, पैरा, एसबेसटास या खपरैल का उपयोग किया जाना चाहिए।
- बाड़े मे शुद्ध वायु के आवागमन की उचित व्यवस्था हो ताकि पेशाब व मल कि बदबू के कारण बकरियों को श्वास लेने में तकलीफ न हो जिससे श्वसन सम्बन्धी रोग न हो।
- बाड़े मे सूर्य के प्रकाश की उचित व्यवस्था हो ताकि सूर्य के प्रकाश के कारण बाड़े में पनप रहे कीटाणुओं का नाश हो सके, इसके लिए बाड़े कि स्थिति पूर्व–पश्चिम दिशा में होने चाहिए।
- नर–मादा (गाभिन व दुधारू), मेमनो एंव बीमार बकरियों को अलग–अलग रखने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए, इसके लिए अन्य छोटे–छोटे बाड़े बनाने चाहिए।
- नियमित रूप से बाड़े कि साफ–सफाई पर विशेष ध्यान देनी चाहिए, इसके लिए बाड़े का फर्श प्रतिदिन फिनाईल से धोनी चाहिए।

## गर्भावस्था व प्रसव काल के समय बकरी की देखभाल

- बकरियों में गर्भकाल 5 माह (145–155 दिन) का होता है।
- स्वस्थ मेमने (बच्चे) हो उसके लिए मां की बियाने की 5–6 सप्ताह पहले खान–पान पर ध्यान दे।
- बकरी से प्रसव होने के पहले पशु चिकित्सक को जानकारी देवे ताकी प्रसव में कठिनाई होने पर उपस्थित हो सके।
- बियाने के 2 घंटे के अंदर मां का दूध (खीस) जरुर पिलायें, लगातार एक सप्ताह तक बच्चे को खीस सुबह–शाम पिलाये।
- जब मेमना 2–3 माह की हो जाये तो मां का दूध पिलाना रोक दे जिससे पुनः बकरी में गर्मी आकर गर्भधारण की सम्भावना बढ़ जाये।
- बकरियों में 145–155 दिन की गर्भधारण होती है इस बीच में अतिरिक्त पोषण दिया जाये साथ ही गाभिन बकरियों को एक से दूसरे जगह घुमाये।
- बकरियों को तेज न दौड़ाये। बैठने के जगह को साफ–सुथरा रखे।

## नवजात मेमनों की देखभाल

- बियाने के बाद मेमनों का तुरंत ही साफ कपड़े से उनकी नाक, मुंह, व खुर पैर की सफाई करे।
- मेमनों के निकली हुई नाल को पेट से ठीक नीचे एक इंच नई ब्लेड से काट दे और धागे बांधकर टिंचर लगाये।
- मेमनों को उनकी मां के पास रखे जिससे चाट–चाटकर गर्मी दे सके।
- मेमनों को दूध पिलाने से पहले बकरी की थन को पोटाश पानी से धो दे।
- मेमनों की मां का पहला दूध (खीस) पिलाएं, खीस नवजात को बीमारियों से लड़ने की क्षमता को बढ़ाती है।
- मेमना 15 दिन का हो जाये तब हल्की मुलायमदार हरे चारे व दाने की छोटे–छोटे टुकड़े कूटकर खिलाना शुरू करे।
- मेमनों को 3 दिन बाद कृमिनाशक टीकाकरण लगवाये।
- नवजात मेमनों को पशु चिकित्सक के निगरानी में रखे।

## बकरियों में रोग :–

बकरियों में लगने वाले प्रमुख रोग निम्न प्रकार से है।

### मुंहपका–खुरपका रोग

- रोग लक्षण मुख्य रूप से मुंह और पैर की खूर पर दिखाई पड़ती है।
- मुंह के अंदर छाले दिखाई देती है जिसके वजह से बकरियां खाना–पीना बंद कर देती है।
- पैर की खुरों पर छाले पड़ जाती है जिसके कारण से बकरी लंगड़ा कर चलती है।

### उपचार –

- बकरियों के मुंह और खुंर को लाल दवा/डेटॉल/फिनाइल से दिन में दो बार धुलायें।